आरोपण का घनत्व

- संकर नस्ल: 50 लार्वा/वर्ग फीट (350 प्रति चंद्रिका)
- द्विप्रज: 40 लार्वा/वर्ग फीट (300 प्रति चंद्रिका)

आरोपण हेतु आदर्श पर्यावरण

- तापमान: 24-25°से
- सापेक्षिक आर्द्रता: 60-70%
- आरोपण कमरे में क्रॉस संवातन

कोसा प्राप्ति एवं विपणन

- ❖परिपक्व होने के पहले फसल प्राप्ति करने पर कोसा की गुणवत्ता प्रभावित होती है।
    - संकर नस्ल: कताई के 5वें - 6वें दिन
    - द्विप्रज: कताई के 7वें - 8वें दिन
- ❖दोषपूर्ण कोसों (विकृत, झीना, युग्म कोसा) को हटाकर अलग रखें।
- ❖शस्य की गई कोसा का फ्लौस हटा दें।
- ❖एक पतली परत में कोसा को संरक्षित करें।
- ❖कोसा को क्रेट्स/पतले संवातित बैग में पैक करें।
- ❖कोसा को सुबह या शाम के समय परिवहन करें।

चंद्रिकाओं की साफ-सफाई एवं रोगाणुनाशन

- प्लास्टिक चंद्रिका से फ्लॉस, मृत / रोगग्रस्त लार्वा, गलित कोसा को हटाकर साफ करें।
- प्लास्टिक चंद्रिका को दिनभर 2% ब्लीचिंग पाउडर के घोल में डुबोकर विसंक्रमित करें।
- चंद्रिकाओं को सूर्य की रोशनी में सुखाएं एवं अनुशंसानुसार फोल्ड करके इनका बंडाल बनाएं। (10 या 12 संख्यक/बंडल)
- चंद्रिकाओं का भंडारण विसंक्रमित स्थान पर करें।

प्लास्टिक चंद्रिकाओं के लाभ

- ✓ उपयोग करना सरल
- ✓ समान गुणवत्ता वाले कोसा का उत्पादन होता है
- ✓ कोसा प्रप्ति सहज होती है
- ✓ चंद्रिका के उपयोगार्थ अतिरिक्त स्थान की आवश्यकता नहीं होती है
- ✓ भंडारण हेतु कम स्थान की आवश्यकता होती है
- ✓ लंबी अवधि तक उपयोगार्थ
- ✓ रोगाणुनाशन करना सहज है
- ✓ समुचित साफ-सफाई बनाए रखना आसान है
- ✓ समय और श्रम की बचत होती है
- ✓ कठिन परिश्रम का परिहार होता है
- ✓ दोषपूर्ण कोसे का निर्माण कम होता है
- ✓ कोसा की उत्पादन लागत कम होती है

डॉ. त. दत्ता विश्वास, डॉ. शफी अफरोज एवं
डॉ. वी. शिवप्रसाद

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

निदेशक, केरेउअवप्रसं, बहरमपुर – 742 101, पश्चिम बंगाल
दूरभाष: 03482-224713, EPABX: 224716/17/18
फैक्स: 03482-224714/224890
ई-मेल: csrtiber@gmail.com; csrtiber.csb@nic.in
www.csrtiber.res.in

पैम्फलेट सं.73   @केरेउअवप्रसं, बहरमपुर   जनवारी, 2020

गुणवत्ता युक्त कोसा उत्पादन हेतु प्लास्टिक कोलैप्सेबल चंद्रिका

केरेउअवप्रसं
केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय
भारत सरकार, बहरमपुर, पश्चिम बंगाल

गुणवत्ता युक्त कोसा उत्पादन हेतु प्लास्टिक कोलैप्सेबल चंद्रिका

कोसा निर्माण करने हेतु परिपक्व रेशमकीट को समुचित फ्रेम की आवश्यकता होती है। कोसा की गुणवत्ता रेशमकीट पालन के लिए उपयोग किए गए चंद्रिकाओं पर निर्भर करती है। पारंम्परिक तौर पर कृषक इस उद्देश्य के लिए बांस की चंद्रिकाओं का उपयोग करते हैं। बांस की बनी हुई चंद्रिकाओं के कुछ दुष्प्रभाव हैं, जैसे

- बहुत अधिक असमान कोसों की संख्या
- आरोपण व फसल प्राप्ति करने में बहुत अधिक श्रम लागत की जरुरत रख-रखाव व रोगाणुनाशन में कठिनाई
- परिपक्व लार्वा के क्षतिग्रस्त होने की अधिक संभावना
- अधिक गलित कोसा निर्माण की संभावना
- युग्म कोसा निर्माण की ज्यादा संभावना
- भंडारण हेतु बहुत बड़े स्थान की आवश्यकता
- कम गुणवत्ता वाले कोसा
- अधिक श्रमिकों की आवश्यकता
- सूर्य की रोशनी एवं बारिश से संरक्षित करने की आवश्यकता

गुणवत्ता युक्त कोसा की विशेषताएं - समान आकार व आकृति, कवच की मोटाई, सघनता, अधि-धागाकरण क्षमता, तन्तु की लंबाई, कवच का प्रतिशत तथा सबसे महत्वपूर्ण विशेषता दोषरहित कोसा (<5%) का कम उत्पादन। रेशमकीट, उचित घनत्व एवं कताई अवस्था के साथ अधि-गुणवत्ता वाले कोसा का उत्पादन करते हैं।

गुणवत्ता युक्त कोसा की प्राप्ति हेतु सभी वाणिज्यिक फसल मौसमों में उपयुक्त चंद्रिका अर्थात् प्लास्टिक कोलैप्सेबल चंद्रिकाओं का उपयोग किया जाना चाहिए। गुणवत्ता युक्त कोसा निर्माण के लिए परिपक्व रेशम कीटों को सही समय पर चंद्रिकाओं में स्थानांतरित करने की आवश्यकता होती है। कोसा बाजार में उच्च गुणवत्ता वाले कोसा अधिक लाभ अर्जित करते है।

ट्रे कीटपालन

- डाला या ट्रे में नीचे अखबार लगाकर प्लास्टिक की चंद्रिकाओं को उस पर रखकर उसमें परिपक्व लार्वा को स्थानांतरित करने हेतु तैयार रखा जाना चाहिए।
- परिपक्व रेशमकीट को डाला या ट्रे से सही समय में संग्रहित किया जाना चाहिए।
- परिपक्व रेशमकीट को समान तौर पर वितरित (300-350) किया जाना चाहिए।

शेल्फ कीटपालन

- 50% से अधिक रेशमकीट के पक जाने के पश्चात हल्का अशन दिया जाना चाहिए।
- स्व-निर्मोचन करने हेतु चंद्रिकाओं को लार्वा के उपर

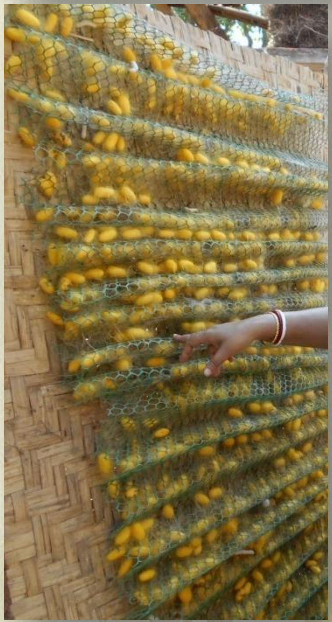- समुचित कताई के लिए नायलॉन की जाली/ पुआल / न्यूज पेपर द्वारा चंद्रिका को ढक कर रखें।
- तीन दिन के पश्चात न्यूज पेपर एवं कताई न करने वाले/मृत/रोगग्रस्त लार्वा यदि, कोई हो तो उसे हटा दें।
- बेहतर कोसाकरण हेतु चंद्रिकाओं को शेल्फ में दोनों ओर बदल कर रखें।